निश्तुकी

निश्तुकी

उमेश मण्डल

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-३७-२

दाम : भा. रू. १४७/-

पहिल संस्करण : २००९

दोसर संस्करण : २०१३

गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला-बिहार, पिन- ८४७४१०, मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष- (०११) २५८८६६५६-५७ फैक्स- (०११) २५८८६६५८
Website:http : //www.shruti-publication.com
E-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor :

Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul),
मो.- ०९५७२४५०४०५, ०९९३१६५४७४२

***Nistuki** : Anthology of Maithili Poems by Umesh Mandal.*

परमादरणीया माए एवं
पिता
केर
चरणमे समरपित...।

उमेश मण्डल जीक ''निश्तुकी''
कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रहक दोसर संस्करणक मादेँ-

उमेश मण्डल जीक ''निश्तुकी'' कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह छी। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै। आ तँए पुरान आ उमेरगर जँ अग्रगामी छथि तँ तिनका प्रतिष्ठा किए नै भेटन्हु?

ई टनका देखू:

समस्याँ आप्त

सोलहनी सजल

साहित्यकार

लेखे पुरान छै आप्त

केना एतै यथार्थ...।

आ तँए ''बुढ़ाड़ीमे'' क्षणिकामे ओ कहै छथि:

जिनगी चाह करैए

कर्मक बाट देखबैए...।

आ कर्मका बाट जँ पकड़ि लेब तखनि धुधुएबे करब:

भुरकी-सँ-भार बनि

बील बोहरि धरि

बनि-बनि असंतोष

धोधरि बनि धुधुआ रहल अछि...।

मिथिलासँ पड़ाइन भऽ रहल छै। से रहि-रहि कचोटै छन्हि कविकेँ। आ जँ वसन्तक आगमन भऽ जाए तखनि तत्व ज्ञान भाइए ने जाएत!

वसंत आएल

गाम जाएब
आब एतए
रहि नै पएब
वसंतेक खोजमे तँ
छी बौआएल...।

ऐ पड़ाइनसँ:

गामक मुहथरि
जंगल बनल अछि...।

हुनका विचारक फाँट सेहो रहि-रहि देखा पड़ै छन्हि:

अहाँक गप
अपन मन
दुनू मिलैए
मिलि दुनू अछि चौचंग
खोजि रहल अछि वसंत
मुदा
वसंतक चिड़ैकेँ
संग नै राखए चाहै छी हम...।
हुनका बुझऽमे आबि रहल छन्हि :
भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे
आ ओ अहाँसँ पूछि रहल छथि:
तखनि शीशामे केना देखाएत
ओकर चित्र केना आएत?

आ कियो नै सुनऽ चाहै छथि ओ गीत जतऽ मात्र आ मात्र गौल जा रहल अछि संस्कृतिक गीत:

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ
सुनैले नै छथि कियो तैयार...।

किए नै सुनै लेल छथि तैयार, कारण अछि डर, दर्दक डरे ओ नै सुनऽ चाहै छथि हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ।

किछु अजीब बात सभ हुनका असहज लगै छन्हि:

आगि-पानिकेँ

मनक माइनकेँ...।

कारण सेहो छै, 'अगिलह'क बिम्ब देखू:

सप्पत खाइ काल देवता

लोकक घर जड़बैकाल मित्ता...।

ज्ञान आ ज्ञानी आ ज्ञानक प्रकाश सेहो हुनका कखनो ओझरीमे धऽ दइ छन्हि:

ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम

सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन धराम...।

लहास जे अहाँकेँ बुझा पड़ैए सेहो आब बाजत:

आब ओ बाजत

बजैत-बजैत हँसत

अहाँक कृतिपर

बनल संस्कृतिपर...।

मंगल आ मंगला हुनकर कवितामे सेहो कएठाम आएल अछि। विवशताक प्रतीक अछि मंगला!

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला...।

आ आगाँ...

अपनाकेँ केलक एकोर...।

तँ सुखाएल घाटक घटवारि मंगलापर देखू ओकर विवशता:

सूखलो घाटक लेतै खेबाइ

नै देबै तँ देत ई रेबारि।

सएह भेल मंगला घूमि गेल

पच्छिमे मुड़ि गेल...।

कवि कुम्हरौटक बिम्ब एना अनै छथि:

काँच माटिक मूर्ति जहिना
ढाँचा मात्र कहबैए।
तहिना तँ फूलोसँ बनल फल
सिरखार मात्र कहबैए।
आ वएह सिरखार ने
आशा बान्हि-बान्हि
रौद-बसात सहैए...।

आ अपने सन आर बटोही सेहो हिनका भेट जाइ छन्हि:

हमरे सन ईहो सभ बटोही
हराएल बाट बढ़ए चाहैए...।

कविकेँ कोनो भ्रम नै छन्हि जे जेहने बाट चलब तेहने घाट भेटत आ तखनि ओइ घाटपर पानि सेहो तेहने भेटत:

जहिना चलैक बाट होइ छै
तहिना तँ बुझैओक बाट छै
जेहेन जे बाट चलै छै
तेहने घाट पहुँचै छै...।

ई बाट आ विचार हुनकर एकटा आरो कवितामे अबैत अछि:

विचारक संग जँ चालि रहल
घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत...।

आ नीक वा अधला बाट कियो केना धड़ैए, तहूपर हुनकर लेखनी चलै छन्हि:

जेहने घरक लोक रहै छै
घरक मुहथरि तेहने होइ छै।
जेहने घरक मुहथरि रहै छै
तेहने ने बाटो धड़ै छै...।

आ ई बाट हुनकर पछोर गजलमे सेहो नै छोड़ै छन्हि:

गोर मौगी गौरबे आन्हर अछि अड़ल

करिया बाट बुझाइए चलू घूमि चली

ओ निराश कखनो नै होइ छथि:

मरलेमे मारि खा-खा

मारल बुइध कहबै छी...।

आ एकर कारण छै, ओ कहै छथि:

जहिना पबिते अद्राक पानि

मुइलहो धार जीबै छै।

भलहिं जीतहा धार बीच

तीन-मसुआ ओ कहबै छै...।

आ ऐ आशा-आक्रोश आ निराशाक मध्य ओ लिखै छथि:

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज

अपन उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।

उमेश मण्डल जे किछु कहै छथि निश्तुकी कहै छथि, घुरछी, ओझरी सभटा चारू कात पसरल छन्हि। मुदा सोझराबै छथि, ओझराबै नै छथि।

-गजेन्द्र ठाकुर १९ मइ २०१३

दूटप्पी-

अपन रोपल पहिल पुष्प अपने लोकनिक हाथमे दैत असीम आनन्दक अनुभव भऽ रहल अछि। कविता संग्रह अपनेक हाथमे अछिए तँए ऐ सम्बन्धमे किछु कहैक खगता हमरा नै बुझाइए। पहिल संग्रह होइक नाते रंग-बिरंगक त्रुटि हएब संभव अछि। जइले अपनेक विचार-सलाह-सुझाव शिरोधार्य रहत। जौं अगिला अंक निकलि सकत तँ जरूर अपनेक विचारकेँ समाहित करब आ से करैत हमरो नीक लगत।

साहित्यक विद्यार्थी होइक नाते कथा, कविता, उपन्यास, महाकाव्य पढ़बाक अवसरि भेटैत रहल अछि मुदा लिखबाक विचार हेमनिमे जगल। ओना परिवारमे साहित्यक प्रति आकर्षण आइए नै पहिनैसँ अछि। बाबेक अमलदारीमे 'महाभारत', 'तुलसीकृत रामायण', कबीर रचित 'अनुराग सागर' घरमे अछि जेकरा समए-कुसमए उनटबैत-पुनटबैत रहलौं अछि।

आइक जे भाग-दौड़क जिनगी बनि गेल छै जइसँ पढ़ै-लिखैपर बहुत बेसी प्रभाव पड़ि गेल अछि। जइक चलैत परिवार-समाजमे अपनापनक विचार सेहो शिथिल भऽ रहल अछि। हाइ-नारायण, सबहक मनकेँ यएह घेरि नेने छन्हि जे पाइएसँ सभ किछु होइ छै। तँए जौं पाइ भऽ जाएत तँ जिनगीक सभ उदेसक पूर्ति भाइए जाएत। मुदा ओ ई बुझैसँ कात भऽ जाइ छथि जे जिनगी जीबैले पाइओक जरूरति होइ छै जे एक साधन मात्र छी।

वैश्वीकरणक प्रभावसँ आइ दुनियाँ गाम-घर जकाँ बनि गेल अछि। जेकर प्रभाव जिनगीक कोणे-कोण पसरि रहल अछि। जखने कोणे-कोण पसरि रहल अछि तखने जीवन-धारा प्रभावित हेबे करत। जखने जीवन-धारा प्रभावित हएत तखने आचार-विचारक संग जीवन-शैली सेहो प्रभावित हएत। एक समए छल जखनि कठिन मेहनति करि कऽ कवि-साहित्यकार शास्त्रीय पद्धति अपनौलनि जे आइक जुगमे कठिन भऽ गेल अछि। जइसँ नव-नव शैली, नव-नव ढंग नव-नव पाठक लेल आबि रहल अछि। जैठाम छन्द-अलंकार प्रमुख छल ओ गौण भऽ रहल अछि। संग-संग पढ़ै-लिखैक दयरा सेहो बढ़ल अछि। देश-विदेशक भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न शैलीक संग भिन्न-भिन्न समाज आ ओकर जीवन पद्धति सेहो बुझबाक-जनबाक अवसरि भेट रहल अछि। जइसँ कवि-साहित्यकार प्रभावित हेबे करता।

कविता लिखैक प्रेरणा आदरणीय भाय गजेन्द्रजी (श्री गजेन्द्र ठाकुर) आ भाय शिवकुमारजी (श्री शिव कुमार झा 'टिल्लू') तथा भाय नागेन्द्रजी (श्री नागेन्द्र कुमार झा) सँ भेटल। 'विदेह' पत्रिकाक सम्पादनक अवसरि जखनि देलनि आ काज करए लगलौं तखनि रंग-रंगक कविता, गीत, गजलक संग-संग गद्यो विधाकेँ देखबाक अवसरि भेटल जइसँ कलम घुसकए लगल।

हलुआ-गीत जकाँ संग्रह भऽ गेल अछि। कविता, लघु कविता, हाइकू-शेनर्यू, टनका/वाका, गजल इत्यादिक समावेस संग्रहमे भऽ गेल अछि।

विदेहक सम्पादकमंडल आ श्रुति प्रकाशनक सभ संगीक आभारी छी जे भरपूर उर्जा प्रदान कऽ रहल छथि। अदौसँ हमरा सबहक संस्कार रहल अछि जे नीकक सेहन्ता आ अनुकरण करैत तथा अधलाकेँ छोड़ितो आ गौणो करैत एलौं...।

हमर ई प्रयास केतेक सार्थक भेल से अपनै निर्णए करब।

अहींक-

उमेश मण्डल

कविता-

कुमही

फूल सदृश रूप हमर
कहबै छी कुमही मगर।
फूले सदृश सिरो हमर
धरतीसँ हटल छी मगर।
ऊपर पानिक बास हमर
पानिए पीब करै छी गुजर-बसर।
लाइग कोनो नै धरतीसँ हमर
रस धरि चुसैत रहलौं ओकर।
पबिते पूर्बाक सिहकी हम
पछिम भाग टहलि जाइ छी।
जखनि पबै छी पछबाक सिहकी
पूब दिस टहलि जाइ छी।
उत्तर दछिन बीच पूब पछिम
विपरीत-विपरीत चालि धड़ै छी।
सिर शरीरसँ नम्हर रहितो
धरती कहियो नै छूबि पबै छी।
आश-निराश बीच हम
सुन्दर रूप बना जीबै छी।
फूल सदृश रूप हमर
धरतीसँ हटल छी मगर।

❍❍

गाल बजेनाइ

के नै जनै छथि अपन गामक मास्टर बाबाकेँ
बाबा अपन कृतिकेँ बेसीए कऽ बेसियबै छथि
दिन बजैत रहै छथि
ई बात कोनो नव नै।
जखनि हिनका लग बैसब
एत्ते धरि जरूर सुनब
  ''फल्लाँ, एस.डी.ओ...,
  फल्लाँ बी.डी.ओ...,
  फल्लाँ, अधिकारी...,
  हमरे पढ़ाएल छी विद्यार्थी।''
बड़ड गर्व होइ छन्हि बाबाकेँ
ई गप्प बजबा-सुनएबामे।
जौं अहाँ हुनक चेहराक आकृतिकेँ
धियानसँ देखब,
साफ बूझना जाएत,
अहूँकेँ हएत-
जँए मास्टर बाबा पढ़ेलखिन
तँए ओ सभ अधिकारी बनलखिन।
मुदा आइ सुबुध
मास्टर बाबाकेँ लऽ गेलन्हि सुदूर
बाजि उठला आइ अपनहि सूर-
  ''बाबा, सी.ओ., बी.डी.ओ. आकि कलक्टर
  बनलथि ओ सभ जँए,
  अहींक विद्यार्थी छेलथिहेँ तँए।''
मास्टर सहाएब हँ-मे-हँ भरलखिन।
सुबुध भाय अगिला प्रश्न दगलखिन-
  ''जे चट्टिया सभ ओहिनाक-ओहिना रहि गेल
  ओकर भागी के भेल?''

❍❍

कंजूस के उदार?

उदार कहब आकि किरपन्नी
सुनब तँ उठि जाएत देहमे बिनबिन्नी।
कियो इमारत ठाढ़ करैमे छथि उदार।
कियो दारू पीबैमे छथि बेहाल।
कियो बेटा पढ़बैमे छथि अपसोगार्थ।
नै कहि सकै छी अहाँ किनको कंजूस।
अपना सीमामे छथिओ सभ उदार।
किन्तु,
जौं अहाँ करब ई सबाल-
"अहाँ रहै छी एक परिवार।"
तखनि हूनक अपसोगार्थ,
कहि देत अहाँकेँ साफ-साफ
कंजूस छथि आकि उदार।
❍❍

आश्चर्य

चहारदेवालीक भीतर मात्र
गनगनाइत अछि बोल
भऽ रहल अछि भोजक बदला भोज।
मात्र ओम्हरे अछि ई गरदमगोल
माने चहारदेवालीक ओही पार।
बनबैत अछि अपनाकेँ मनोरंजन योग।

परती-पराँतमे रहएबला लोक
जनमहि काल भेल छल मइटुग्गर।
छेँटगर होइसँ पहिने
ओ कहबैत छल दूधकट्ठू।
आइ दुनू हाथ जोड़ि
दू सए फीट एन.एच. सड़कक कातमे
हजारक-हजार कहबैत अछि दिनकट्ठू।

पएरमे चट्टी नै छै पहिरैले
चलए मुदा पड़तै पक्की सड़कपर।
शीशा-काँटी पसरल सड़कपर।
खाइ-पीबैक नै छै जोगार
आ ने छै कोनो रोजगार।
चारूभरसँ खाली सुनै छै-
"जल्दी जोड़ि लैह सरोकार तूँ
एक्कैसम सदीक समाज तूँ।"

❍❍

भाषाक प्रभाव

हमरा सबहक माथपर
पसरल अछि अमरलत्ती जकाँ किछु
कियो सुचिंतक नै जे
चिंतन करता ऐपर
ई कथी लतड़ल अछि सभपर?

मुदा दुर्भाग्य
ऐमे छिपल अछि किछु बात
जइमे अछि नै एक्कोटा पात
सबहक कहब छन्हि
"ई आगाँ चलि कऽ
करत प्रदूषण साफ।"

जीबले स्वच्छ हवा-वसातक
अछि जहिना खगता
करत ई दूर सबहक बेगरता।

देखा चाही ई दूर करत प्रदूषण
आकि करत सभकेँ निपत्ता।
❍❍

धर्मात्मा

धर्मात्मा होइ छथि तियागी।
तियागी कहल केकरा जाए यौ भैयारी?
वएह ने
जे केलनि तियाग
आकि ओ
जे केलनि भोग बेसुमार।
एक लोटा पानियोँ पीलनि
दोसरेक हाथ।

मजदूर, हरबाह
भिनसरसँ साँझ धरि
देह धुनैए।
उचित बोनि मात्र दू सेर पबैए
एक सेर बेच लऽ दोकान जाइए
नून, तेल, हरदी, गोटी किनैए
बँचलाहा एक सेरसँ
सभो परानी पेट चलबैए
भरि दिन तँ ओहो खटबे करैए?

अहीं कहू,
केहेन पंचैतिया एले
पंचैती करए काल
ऊपरे-ऊपर नजरि दौड़ौलकै।
काजुल संग तियागीकेँ देखि ने पेलै
हिनक तियागपर नजरि नै खिड़ेलकै
भोगीकेँ धर्मात्मा कहि गेलै।
❍❍

शुभारम्भ

साँझक समए छल
झिस्सी पड़ैत छल।
हालहिमे सिनेमाक हाँल
जे थप्प भेल पड़ल छल
तेकर पुन: शुभारम्भ भेल छल।

अबैत रहथि ओम्हरसँ ओ
लखन पान दोकानदारकेँ देखिते
पूछि देलखिन हाल-चाल करिते
  "की यौ लखन, दोकान तँ आब
  चलैत हएत खन-खन?"

लखन करए लागल भन-भन-
  "आबे गड़बड़ अछि
  पहिनै ठीक छल।"

ओ वेचारे सोचए लगला-
जहिएसँ हाँल चालू भेल हएत
दोकान सबहक विक्री चौगुना भेल हएत
तखनि ई किए बजैए
पहिनुके विक्रीकेँ नीक कहैए।

ओ, विचारए लगला हठात्
भीतरमे आखिर अछि किछु बात
लखनसँ पूछि बैसला तराक-
  "केना पहिनै ठीक छल
  अहाँक समाचार नीक छल?"

“यौ भाय,
हम अपन विक्रीसँ खुशी छी
विक्रमक विक्री बढ़ि गेने
ओइसँ बेसी दुखी छी।”

लखन किछु अहिना सोचलक
किन्तु मोनक बात नै उगललक।
❍❍

मुहथरि

जेहने घरक लोक रहै छै
घरक मुहथरि तेहने होइ छै।
जेहने घरक मुहथरि रहै छै
तेहने ने बाटो धड़ै छै।

जेहने जेकर बाट रहै छै
आचारो-विचार तेहने होइ छै।
जेहने आचार-विचार रहै छै
तेहने ने संस्कारो बनै छै।

जेहने जेकर संस्कार होइ छै
तेहने ने जीवनो भेटै छै,
तेहने ने कला-संस्कृतो होइ छै।
जेहेन जेतए केर कला-संस्कृति रहै छै
मनुक्खक मुहथरि तेहने होइ छै,
साहित्यक मुहथरि तेहने होइ छै।
❍❍

पचमेड़

पाँच मेड़ मिलि एकठाम
कहबैए पचमेड़।
जहिना बाट चारि मिलि
कहबए चौमेड़।

मेरहा-मेरहा जौं विचार करब
रंग-बिरंगक पचमेड़ देखब।
आउ देखी आगूक मेड़
खाजा-लड्डू, जिलेबी-बुनिया ओ बताशा
सभ मिलि एक
सेहो कहबैए पचमेड़।

फूट-फूट भऽ टुकड़ी बनि
नाओं अलग एका-एकी
जहिना आड़ि-घूर फुटल
आड़िए-धूर नाओं कहबैत।
तहिना ने फूट भऽ खजो-लड्डू
खजे लड्डू कहबैत रहैत।

मेड़-मेड़ मिलि-मिलि
मधुर-मधुर जहिना बनैत
तहिना ने विचारोक बीच
करक चाही विचार यौ मीत?

मिलि विचार-आचार पाँच
पचमेड़क संज्ञा लैत अछि साँच।
विचार मधुर मेड़क
अछि प्रत्यक्ष पचमेड़क।
तीनू तीनठाम भेने
कहबैत बलजोरी अछि भने...।

❍❍

खपड़ा

माटि-पानि संग मिलि
सानि-बाटि कऽ मिला-मिला
मुंगरीक माइर मारि कऽ
थोपुआ खपड़ा बनाओल जाइत।

ठोकि ठठा थोपुए जकाँ
नरिया सेहो बनाओल जाइत
बात अलग चाकोपर
नरिया खपड़ा बनैत हाथोपर।

साचा पाबि टाली बनैत
नम्हर-नम्हर गड़ धड़ैत।
नरिया-थोपुआ, टाली
एक-दोसरपर बजेलक ताली
कहियो एक-दोसरक बीच
मेल-मिलाप नै केलक खाली।

एक मुंगरी दोसर चाक
मारि खा-खा बढ़ेलक हाथ।
देखि दुनूक मेल-मिलाप
टाली खपड़ा आबि
करए लगल सभकेँ साफ।

साचाँ भरे बनल टाली
अपन शरीर केलक भारी।
बत्ती कोरोसँ बनल ठाठ
जवाब देलक जोड़ल हाथ।

आबि बिच्चेमे एस्वेस्टस
सभकेँ हड़बड़ेलक।
टगि-टगि खपड़ा टाली
नपरा बनि होंसथए माथ खाली।
❍❍

गामक इयार

अहाँले परदेश तियागल
अहींले सुख-सुविधा तियागल।
परदेश कमा लोक धन बनबैए
सुख-भोगसँ तृप्त रहैए।

बाढ़ि-रौदी सहि-सहि
अहींक संग रहै छी।
अहाँक सिनेह पबैले
आगि-छाइ सेहो सहै छी।

फूसिघर मे रहि-रहि
पानि-पाथर सेहो सहै छी।
लत्ता-कपड़ा बिनु तन
प्रेम करैत आएल मन।

पाला-शीतलहरी सहि-सहि
संग अहाँक पुरै छी।
इयारक-यारी निमाहि-निमाहि
मातृभूमिक संग जीबै छी।
❍❍

पएर पादुका

विचार-सकल बीच फँसल
अप्पन आन बुझाइए।
इम्हर केकरा के देखत
दूरेसँ छिड़िआइए।

दोहरी जीनगी देखि-देखि
अपनो मन बौआइए।
भेद-भावक जइ नगरीमे
आइओ ओ चीज देखाइए।

आइ गप-सप्पक बीच चीज ओ
बदलल अबस्स बुझाइए।
गप-सप्प ओ बेवहारक बीच
अन्तर सभ दिनसँ अबैए।

बूझि-बूझि बुझैत
रहलौं हम डरैत
एना किए भऽ जाइए।
होइमे कोन
हेबे करत
हृदए हमर कहैए।

किए पएर पादुका अपन
पहिर-पहिर नै चलैए।
एम्हर-ओम्हर देखि-देखि
निचलाकेँ ऊपरे-ऊपरे
ऊपरका खोंटि खाइए?

तरे-तरक ऐ चालिकेँ
नै बूझि मारि खाइए।

बँचल जिनगी अकारथ बना
कामौर कान्ह चढ़बैए।
❍❍

छठि

पोखरिक चारूकात
बनौलथि गौआँ घाट।
भरल पथिया लऽ
धेलथि सभ बाट।

पहुँचला सभ हाली
सजेलथि अपन-अपन डाली।
जरैले भेल तैयार दिआरी
हाथीओ केलक अपन तैयारी
जरैत दीप कुरनीपर
लऽ धेलक माथपर।
अछि हाथी बैसल हाथी
आइ छठिक घाटपर।

टौकना, खमहरूआ, सुथनी,
हरदी, आदी इत्यादि
सभ पुरौत अपन-अपन फर्ज
सभ, चुकबए चाहैत अछि कर्ज
देत सुरूजकँ अर्घ।
❍❍

भोगी

नाच करए बानर
चाउर खाए मदारी
बीचमे यएह अछि सरोकारी।

विकासक नाओंपर भऽ रहल अछि नाच।
मानसिकता, मानसिकता, मानसिकता
पसरल अछि चारूकात
नीक बात!

किएक नै हुअए विकास।
बीक रहल अछि चारूकात
ब्लडप्रेशर-डायबिटीजक गोटी
संगे-संग।

तैयो मदारीए बनल छथि तियागी
भरि जीवन भोजन केलनि बैसारी
ऊपरसँ दबाइओकेँ बढ़ौलनि वेपारी।

भोग करैत-करैत भेल छथि अघोर
तैपरसँ रटना लगेने छथि ताबरतोर
कल्याणपुर जाए चाहै छथि सोरपोर।

हमरा बीचमे हुअए कोनो नै बाधा
हम सभदिन रहलौं जे मधुशाला!

बनलै तँ अछि विचारशाला
जइमे लटकल अछि बड़का ताला।
❍❍

श्रोता

भागवत वाचन शुरू भेल
श्रोता सभ आबि-आबि जगह लेल।
चारि तरहक श्रोता बैसल छथि
अपन-अपन काज-धियानमे मगन छथि
बाचको आ श्रोतो।

एक तरहक श्रोता
भागवत सुनि नीकक प्रचार करै छथि
दोसरोकेँ नव गप्पसँ अवगत करबै छथि।

दोसर श्रोता अंगीकार करै छथि
मुदा बजै नै छथि बिनु किछु पुछने।

तेसर श्रोताकेँ देखियो
बैसल छथि भागवत प्रवचनमे
मुदा धियान छन्हि वेपारमंडलमे
घुरियाइत-नुरियाइत।

स्पष्ट अछि किछु नै पेला ई
प्रसादेटा खेला ई।

चारिम श्रोतापर करू विचार
ई छथि मुदा सदाचार
सुनितो छथि, गबितो छथि
अपन जिनगीक क्रियासँ मिलैबितो छथि।
ओतबे नै,
डेन पकड़ि पछुएलहाकेँ खीँचितो छथि
आ,
ठमकलहाकेँ धक्का सेहो लगबै छथि।
❍❍

कल्याणी

कल्याणी नाओंसँ लगैत अछि जेना
केने हेती ई किछु एहेन काज
वा करती।
जइसँ भेल हएत कल्याण
वा हेतै कल्याण।

मुदा से भेल आकि नै
एत्ते धरि जरूर भेल।
भाग्य-तकदीर सभसँ पैघ होइत अछि
से कहि जरूर गेलि।

शब्दजाल, वाक्यजाल
सन महजाल।
बनि बना कऽ
फँसबैत धरि जरूर गेल।
❍❍

देश

हमर देश
किछु लोक खेलि रहल छथि धुरखेल।
खुट्टीसँ आगाँ पड़ल बड़का देबाल
देवालक भीतरे लागल अछि
मड़कड़ी चारूकात।

इजोत चकचकाइत अछि
दिने जकाँ राइतो बुझाइत अछि।
चुट्टी-पिपड़ी छोड़ि सभ किछु देखाइत अछि
मुदा,
देबालक अंतिम खुट्टीसँ ओम्हरे
भऽ रहल अछि मनोरंजन।

हेबक चाही
जरूरतिसँ ऊपर उठि गेलापर
स्वभाविक अछि।
मुदा देवालसँ इम्हर
वोन-झार सदृश
मनुक्खक जड़ल रूप
मनुक्खक खेखनैत स्वर
कियो सुनैबला नै!!

चारि तरहक नाओं
रचैबला लोक
देशक भीतरेमे बड़का देवाल ठाढ़ करैमे
अपनो उड़लनि होश।
तथापि कऽ रहल छथि किलोल
हमर देश अछि अनमोल
एक्कैसम सदीमे हम
चलि रहल अछि ताबरतोर।

❍❍

नोर

गोरसपट टकधियान लगेने
मुनिया बैसल अकानैए।
घर-अंगन, द्वारि-दरबज्जा
भोरे सभ दिन बहारैए।
बर्तन-बासन, छिपली-कटोरी
सभ दिन चमका-झलका मांजैए।
झक-झक झलकैत
थारी-बाटी देखि
मुनिया माए गुनगुनाइए।

गुनगुन्नीमे अह्लाद भरल छै
सुख-दुख सेहो उमरल छै
मुनिया आब छोड़त ई दुनियाँ।
ई प्रश्न घुरियाइ छै।

माइक आँखिक नोर
मुनियाक हृदैमे उठबैत हिलकोर
भऽ जाइत अछि बेहोश।

होश अबिते फेर अकानैए
आँखिक नोर निङहारैए
माइक मन टटोलैए।

सुखक नोर आकि दुखक नोर
दुनू एक्के संग टघरैत-झहड़ैत
माइक चेहरापर देखैए।
खूर-खूर, खूर-खूर काजौ करैए
घर-आँगन सम्हारबो करैए।

मुनिया मुदा ई बूझि नै पबैए

खुशी आकि दुखीक छी नोर
माइक आँखिक ई नै बूझि पबैए
यएह बेवसी मुनियाकेँ सतबैए।
❍❍

धारक कात

अपना आँखिए सभ देखैए
अपना चालिए सभ चलैए।
सज्ञान-अज्ञान आँखिक बीच
चालिओ अपन चालि मारैए।

जहिना धारक दू भीत्ता बीच
पानिक तेज धार बहै छै
तहिना मनुख-मनुख बीच
अपन-अपन जिनगीक धारा छै।

चालि-चलनि सदृश टुकड़ी
जुटि-जुटि महार बनै छै।
जहिना धारक महार संग
आकृति रंग-बिरंगक छै।

सभ मनुखक बीच तहिना
ओहिना सदएसँ बनल अबै छै।
एक जाइए दोसर अबैए
उराहि-उराहि कर्म करैए।

उराहए-निमाहए लेल
बेवस्था बीच छै अनमेल।
कियो लिरही पोखरि सदृश
तँ कियो मरता इनार जकाँ
सदएसँ पड़ल मरता भेल।

बेवस्था जेकरा हाथ लगल छै
सेहो तँ भूतही धार बनल छै।
उनटैत-पुनटैत करैए खेल
तामसे बीख, बिखाह अछि भेल। ❍❍

मारल बुइध

मरलेमे मारि खा-खा
मारल बुइध कहबै छी।
मरले बाट पकड़ि-पकड़ि
हँसी-खुशीसँ जीबै छी।

मरले ने जीवियो जाइ छै
जीलहे ने मरबो करै छै।
जहिना पबिते अद्राक पानि
मुइलहो धार जीबै छै।

भलहिं जीतहा धार बीच
तीन-मसुआ ओ कहबै छै।
तीन धार किएक ने हो
ऊहो तँ धारे कहबै छै।

बाट-घाट बना-बना
यात्री पार करै छै।
मुइलहा-जीतहा बीच सदए
तीरम-तीर चलै छै।

एकक सम्बन्ध हिमालयसँ रहने
फाँड़ी सेहो फुटबै छै।
ऊहो बीच दोसर एहेन छै
अपने बेथे बेथाएल छै।

एक-दोसर बीच ताना-तानी
चलैत आबि रहल छै।
एकैसम सदीक ढाढ़स बना
नहर खुनबै छै।
मुदा ऊहो

कागत-पत्तर बीच सदए
ओझरा-ओझरा मरै छै।
❍❍

खुशी

ओर-छोर विहिन दुख जहिना
सुखोकेँ तहिना ने होइ छै।
एक जाइए दोसर अबैए
दुख-सुख सेहो कहबैए।

सुख-दुखक चालि अजीब छै
संगे-संग चलैत रहै छै।
तारा-ऊपरी लटपट-सटपट
छाती मिला-मिला चलै छै।

सभकेँ अपन-अपन खुशी छै
चाहे बेकती हुअए आकि परिवार।
तहिना ने रोगो-वियाधिकेँ
छै अपन सबहक दरकार।

बेकती-बेकती बीच-बीचक
केना दुनू संगे चलतै।
जाबे तेना नै चलतै
बेकती परिवार केना बनतै।
❍❍

बाट-बटोही

बाट चिन्हबैत बटोहीकेँ
पहुँचबैत घाट बटोहीकेँ।
चलि-चलि बटोही पहुँचैत
घाट लेल बाटे-बाट।

विचारक संग जँ चालि रहल
घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत।
विचारक टुकड़ी वाणी बनि वाण
रच्छा, शक्ति बनि उभड़त।

शक्ति तँ शक्तिए बनि
चाइलिक भरे खाइए।
एक बटोही भार बनि
भारक संग भरमबैए।
मुदा,
दोसरक किरदानी देखि-देखि
गारा संतोष लगबैए।
❍❍

हे यौ अहाँ

हे यौ अहाँ, केलौं जे किछु अहाँ
जे केलौं अपनेले अहाँ।
तइले दुख हमरा अछि कहाँ।

सुन्नर निर्मल छोड़ि अहाँ
अकल्याणक बाट पकड़ि
खुरछाही कटैत रहलौं
बदलैत रूप ओ स्थितिकेँ
चिन्ह-जानि कऽ तैयो अहाँ
ढेका पकड़ि टहलैत रहलौं अहाँ।

आइ जौं हम, किछु बजै छी
आकि किछु करै छी
तइमे किए मास्टरी करै छी अहाँ।

काल्हि अहाँकेँ हमर
कोनो भान नै छल
कन्निको धियान नै छल।
मुदा, भुखल केर पेट भरबाक जगह
तेल, फुलेलक फेरिमे
धकलैत ओइ जेरमे रहलौं अहाँ।

आब गाम, गाम नै रहल
विश्वक गाम भऽ गेल।
अहाँक बजारोसँ पैघ आ सघन
जेतए इमानदार, कर्मठ आ उदार
रहैत आएल अछि आइसँ नै आदिसँ
जेकर साक्षी अछि इतिहास।

संभवत: अहुँक चपचपी सघन

भऽ जाइत अछि तखनि
गामेक नक्शामे।
❍❍

अपन गाम

उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
उजड़ि गेलौं उपटि गेलौं।
केरा आ अड़िकंचनक पात
कलक बगलक खत्ता बले
दुनूक लहलहाइत वीर देखि
विश्वस्त भऽ आश्वस्त भऽ
हम उड़ि गेलौं।

बिना जड़ि-मुड़ीक भऽ गेलौं
ठुठ गाछ सन।
नव पेंपी खोजक लिलसा
मनमे अछि हमरा व्याप्त।

मुदा,
खत्ताकेँ हम बुझै छी अधला
जे हमर करत कल्याण।
संभवत: तँए,
हमरा नै अछि विश्वास
उड़ैत-उड़ैत उठि नै सकलौं
बौराए गेल छी अकासे-अकास।
❍❍

किछु नै फुराइए

की कही कहल नै जाइए
देखै छी रहल नै जाइए।
सुनै छी तँ आश्चर्य लगैए
हवाइ लड़डू सगतरि बिकाइए।
हाथीक बदला सिक्कड़ि नेने
साँझ-परात घुमैए।

लेल्हा, लुल्हा, लूटलाहा
वंचित भऽ कऽ
अपन भाग्यपर कनैए।
बेवस्था केर होइत नाच
साँझ-परात सभ देखैए।

निनाएल आँखि, भकुआएल मोन
नैसर्गिक प्रतिभाक टोना करैए।

विश्वक आहटि पाबि
विज्ञानक सुगबुगाहटि देखि
किछु क्षण लेल सभ एक होइए
मुदा,
ओ सिक्कड़ि
कखनो जातिक तँ कखनो धर्मक
माला पहीरिबैए।

कखनो झालिक धून तँ
कखनो मृदंगक।
अपन धुनक धूनिमे सभ
अंध भेल बौआइए
किछु नै फुराइए।
❍❍

के मैथिल?

जहानक परम सत्य
जेकरा अंग्रेजिया युनिभर्सल सच्च कहै छथि-
  ''सुरूज पूबमे उगैए।''
जौं बेर-बेर आदित्यसँ पूछल जाएत
तँ की हएत...?

ओहो भऽ जेता भक्
की देखबए चाहै छथि
संसारक लोक...
की ओ कर्तव्य पथसँ विमुख छथि?
प्रत्यक्षकँ प्रमाण की?
किए देती वैदेही बेर-बेर अग्नि परीक्षा।

दशानन जौं सीयासँ
करितथि सम्पर्कक प्रयास
भष्मिभुत हएब निश्चित छल।
भगवानोकँ बूझल छेलनि
तखनि रघुवर किए लेलनि
सीताक अग्नि परीक्षा?
मिथिलाक बेटी कतए गेली...
दोख केकर?

राजधर्म वा कर्तव्यबोध
भरिगर पड़ल लोकक अविश्वास
जेकरा लेल सुखसँ विमुख भेलथि रघुवर
ओकरे आँखिमे नोर नै...!

तँए, दूर नै भगाउ
बेर-बेर किए कहै छी

"हमहूँ मैथिल"
कखनो तँ अपनो मोनसँ पुछू
"अहाँ मैथिल, आकि हम मैथिल?"

फुलबाबूकेँ भेटलनि पुरस्कार
वयनाक धेने हथियार
मुदा, हुनक नेना-भुटका
मैथिलीसँ छथि अनभुआर...
फुलबा मैथिलीक नै अछि
साहित्यकार।
मुदा हाथमे भाषाक पतवार
धेने घुमि रहल अपन खेत-पथार
डोका-काँकोड़ बीछ ओ
भैंटक लाबा चिबा कऽ
उफनैत सोनित जरा रहल अछि
मिथिलामे बैसल....।
मुदा,
प्रश्न रहिए गेल
के मैथिल?
❍❍

बाधा

विदा भेल मंगला पूभर
कान्हपर टँगने अछि साइकिल बालुपर।
कहुना कऽ लगिचेलक
लटपटाइत पहुँचल
धारक कछेरमे।

बिनु पानिक अछि धार
चक-चक करैत अछि बालु चारूकात।
नाउ नै बालु देखि भेलै
मंगलाकेँ थोड़े होश एलै
अपन छूच्छ जेबीपर भरोस भेलै
आब टपैमे कोनो नै हएत बाधा
पहुँचबे करब सरायगढ़क पाठशाला।

मुदा,
मंगला लसकि गेल घाटपर
नजरि दौगौलक अपन कोनो लाटपर।

जेबीमे देने हाथ
तकैए चारू कात।
सोचैए,
आब की करबै हौ बाप
ई तँ लेबे करतै घाटी।
जेना लगैए एकरा उठल छै आँती।

सूखलो घाटक लेतै खेबाइ
नै देबै तँ देत ई रेबारि।
सहए भेल मंगला घूमि गेल
पच्छिमे मुड़ि गेल।
❍❍

कविता

हम नै बिसरब
अपन सनातन आ संस्कार।
नै बिसरक चाही अहुँकेँ अपन आचार
दोस बनब आकि दियाद-बेहाल
आकि करब खाली हाल-चाल?
तैयार भऽ गेल अछि सबालक महाल।

अहाँ नै बुझै छिऐ
बनि जाउ दियाद।
अहाँ करू किछु रियाज
पाँति राखू चारि याद।

यौ दोस अहाँ आनू अपन होश
कए लिअ स्वीकार
हे यौ दियाद।

हिया गुनि भरल
दियाद सुनि पड़ल।
फाँट बीचमे आबि धूनि पड़ल।

हट, हट, हट नै तँ घसक
फाँट करए उद्घोस।
दुनू अपन ठाम बेहोश।

मुदा,
तैयार भेल सोर-पोर
कल्याण लेल ने कन्निको जोर
सोल्हन्नी अपन फाँटले ताबरतोड़।
❍❍

खास

खास जगहक खास आदमी
खास जिनगीमे खास बात।
देशक नाओंपर भऽ रहल खास।
मुदा,
जखने देश एक परिवार
सभकेँ चाही रोजगार।

खुशी चाही सबहक घर-दुआर
आकि ईहोमे करबै वेपार?
गुजरि गेल मध्यकाल आ भक्तिकाल।
मुदा
पाछू मुहेँ लुढ़कल किए
जाइ छी यौ महराज?
❍❍

फंदा

जखने करब नखरा
सभ कहबे करत
हमर दऽ दिअ बखरा
जँ अहाँ रहब शांतिचित्त
भेटत अपन सभ परिचित।

करब अहाँ कल्याणक काज
सभकेँ हेतै अपने-आपपर लाज।
लाज सिखबैत अछि काज
आ मुहोँ मोड़ैत अछि हठात्।
भऽ जाइत अछि केनादन
धऽ लैत अछि अमती काँटसन।
❍❍

डेग

गामक गाम भेल बाम
जखनि ओ केलनि एलान
छोड़ह आब अल्प्राजोलाम।

गाढ़ निन्नमे डूमि जा दोसरे साँझ
मुदा अइले करए पड़तह एक काम।
आपसमे बैस निर्णए करह आम
करह प्रतिज्ञा खा सप्पत
तोड़ि देब, छोड़ि देब
देहेजक ताम-झाम।

करब मात्र आवश्यक खर्च कल्याण।
बहुतो कएलनि स्वीकार।
जिनका सिरपर बेटीक बिआह छन्हि सवार।
मुदा,
वएह आदमी बेटा बिआहमे
भऽ जाइ छथि बाम!
कहू,
केना टुटत दहेजप्रथा केर ताम-झाम?

प्रश्न आगाँ आबि केलक सबहक माथ जाम
भऽ गेल गोलबन्द किछु गाम
पुन: भेल सप्पत-सप्तान।

अपना सभ छी बुधिजीवी सभ प्रणाम
चलत अपने सबहक गोड़ धाम
मुदा, चलए पड़त अपनो एक चालिपर
कम-सँ-कम भेल गोलबन्द गामपर।

चलए लगल सभ भऽ एकठाम

किछु दिन मात्र चलल ई काम।
बादमे देखल गरीब-धनीक बीच
ठाढ़ भेल बड़का खाम्ह।

देखि सकै छी पचिसो गाम।
समस्या तँ अछि भेले भेल बाम
आब कोन करब काम?

अइले विचार आ दृष्टिकोण बीच
रचए पड़त...
गुनए पड़त...
देखए पड़त...
तखनि हएत सर्वकल्याण।
गप्प देलासँ चलत नै काम
विचार कऽ उठए पड़त
समाजकेँ चिन्हए पड़त।
समस्याकेँ देखए पड़त
यथार्थकेँ जानए पड़त।

सर्वकल्याणसँ सरोकार जोड़ए पड़त।
बेवहारिक रूप आ चालि धड़ए पड़त।
गप आ काजक बीचक खादि भरए पड़त
तखनि होएत समस्या भराम।
❍❍

बुझैक बाट

जहिना चलैक बाट होइ छै
तहिना तँ बुझैयोक बाट छै।
जेहेन जे बाट चलै छै
तेहने घाट पहुँचै छै।

कियो पहुँचए घाट सरोवर
कियो पहुँचए कमला घाट।
कियो पहुँचए मरैत परलाही
तँ कियो पहुँचए धोबघाट।

जेहेन जे घाट पहुँचैत
तेहने जल से पेबो करैत।
जेहेन जल जे पाबि पबैत
से तेहने ने पीबो करैत।

गुण अवगुण तँ पाछू बुझैए
तत्-खनात तँ तरास मुझबैए।
❍❍

कनीटा फूसि

कनीटा फूसि बजा गेल
सुबुधकाका लग आइ।
सुबुधकाका बूझि गेला
टोकि कऽ आगूमे थूक फेक देला।

सरमे-भरमे किछु नै बजलौं
आगू माहँ देखि नै सकलौं।
सोचैत-सोचैत सोचि नै सकलौं
अपन गलती बूझि नै पेलौं।

नीक बेजाए बीच रहलौं सभ दिन
आगूक मतलब बूझि नै पेलौं।
❍❍

पोखरि उड़ाह

सोलो सालसँ गदियाएल पोखरि
उड़ाहैले तरसैए।
करमी-केचलीसँ भरियाएल पोखरि
कुहरि-कुहरि कहैए।

युग-युगसँ दू-दिसिया मारि
मुर्दा बाट पकड़ेलक।
सहे-सहे पसि-पसि
घाटक मुर्दा बना देलक।

नै रहल कोनो आश जिनगीक
आ ने रहल कोनो मनोरथ।
हारल मन बाजि ने पबैए
बात अपन कोनो सार्थक।

की कहब किनका कहब
अपन बेथे सभ बेथाएल।
देखत के केकरा यौ भैया
बीख पीब अछि सभ बिखाएल।
❍❍

घाम

घाम चुबा-चुबा कऽ
तमैत अछि कोलाक कोला
लगबैत अछि फसिल
धैर्य आ दिलसँ।

बाढ़ि-रौदी बिच सदिकाल
किसानक हृदैमे उठैत अछि
धैर्यक ज्वार।

अपनो खाएब
दोसरोकेँ खिआएब।
यएह तँ हिनक अछि मनोकार।
मुदा,
ऐ मनोकारकेँ कियो नै दैत अछि।
सभ अपन-अपन सरोकार।
कागतपर बनबैत अछि
खुनाइत नहर चित्र।
पाछूसँ भोथाइत अछि
ढबकल रोशनाइ इंक
आँखि फाड़ि-फाड़ि सभ देखैत अछि
किंतु कियो ने लजाइत अछि।
❍❍

ठूठ बाँस

बगुला बसिते ठुठिआए लगलै
हरिअर-घनगर बँसबिट्टी।
बास बना-बना बसए लगलै
उजरा बगुला सबहक पतियाएल धाड़ी।

कोनो अछि ठूठ भेल रोग-वियाधिसँ
कोनो ठूठ छै बाढ़ि बेटीसँ।
समूह छोड़ि-छोड़ि कोनो
ठूठ भेल अपन करनीसँ।

जे कहियो छेलै हरियाएल वाड़ी
सूखल अछि आइ ओ
सील बनल पड़ल अछि आइ ओ
चीड़-चीड़ कऽ लोक
जरना बना-बना ओकरा
जरने जोग कहाइत अछि ओ।

तँए कि ओकर गुण देह अकारथ
नै! एकदम नै!!
मुरदो बनि हँसै छै।
रश्मि रूप पाबि-पाबि
रश्मि संग
हँसि-हँसि जरै अछि।
❍❍

लतड़ैत लत्ती

हरिअर-कोमल तत्ती करैला
आँखि मारि-मारि कहै छै।
अछैते औरूदे निकलैए प्राण
तरसि-तरपि कऽ कहै छै।

ऊपरे-ऊपर एना दबतै
जनु भम्रमे पड़ल छेलै।
लत्ती बूझि लतड़ए देलकै।
संगी कहि-कहि संग धऽ धऽ
धात केलकै भीतरे-भीतर।

जइ सेवा लेल जन्म भेलै
किछु कहाँ पाबि पेलै
ई गप ओ
बुझलक अंतिम।
जिनगी अकारथ बना-बना
मृत्युक बाट अपने धेलक।
❍❍

बौआएल बटोही

बिनु ओर-छोड़क बाट बुझने
ओर-छोड़ बिनु बुझने बौआइत रही।
आगू-पाछू देखि-देखि बटोही
मने-मन पचताइत रही।

हमरे सन ईहो बटोही
हराएल बाट बढ़ए चाहैए।
सबहक एक्के उदेस अछि
सुखसँ जिनगी जीबए चाहैए।

रस्ता-बाट सबहक भिन्न-भिन्न
जे जा-जा एकठाम मिलैत।
एकबट्टी, दुबट्टीसँ बढ़ि-बढ़ि
पचबट्टी जा-कऽ फँसैत।

जइ पचबट्टीपर पहुँच कऽ
रावण हरलनि सीताकेँ।
ब्रह्मचारी रूप बना सजि-धजि
भ्रमित बनौलनि सीताकेँ।
❍❍

फकुआक रोटी

भादबक पूर्णिमाक इजोत
बदरीहन बादल चमकि उठल।
छने भरिक भलहिं किए नै
भीतर-बाहर ज्योति पहुँचेलक।

सालक तँ सभ शुभ लक्षण
माघेक बर्खा करौल स्नान।
चढ़िते फागुन सजबए लगल
फूलसँ लदि गेल आम।

फूले नै फड़ो भेल तहिना
आशा-अशी बीतल चैत-बैशास।
चढ़िते जेठ सिनुर सिंगार कऽ
भरि-भरि रस रसाल बनल।

जेठ-अखारक सुख-भोग सभटा
साउनेमे सठिया गेलै।
भादवक झटकी केना कऽ कटतै
भकुआक रोटी आश भेलै।
❍❍

पंच परमेश्वर

भगवती पूजामे
पचमेड़े प्रसाद चढ़ै छै।
खाजा-लड्डू, जीलेबी-बतासा
बुनियाँ मिलि पचमेड़ कहबै छै।

जहिना पाँच दिससँ अबैत बाट
पचबट्टी कहबै छै।
तहिना पाँचो मधुर मिलि कऽ
पचमेड़ सेहो कहबै छै।

पाँच नदीक बेग मिलि जेना
प्रशान्त सागर कहबै छै
तहिना ने पाँचो विचारधारा
पंच परमेश्वर कहबै छै।

पंच प्रमेश्वर बास करए
सुख-दुखक मेल-मिलाप करए
पाँचोक सुख-दुख पाँचो बूझि
परमात्मा परमेश्वर नाओं धरबए।
❍❍

गाए

मंचामृतक समुद्र
गाएकँ कहल जाइ छै।
सभ किछु रहितो बेचारी
पशु बनि जिनगी जीबै छै।

अपन अजादी तियागि-तियागि
जंगल छोड़ि संग पकड़ै छै।
अपन देह गला-गला
सेवा धर्म बुझै छै।

दूध अमृत
अमृत छी दहियो।
घी ज्ञान कहबै छै।
आषब-अरिष्ट बनि-बनि
जीवन दान गोंत करै छै।

आँगन-घर पवित्र करैले
गोबर जिनगी दान करै छै।
अपन फला-फल पबैले
सभ किछु लूटबै छै।
❍❍

तुलसी

पंचामृत जहिना बनै छै
पॅचमेबो तँ तहिना होइ छै।
पाँचो गुणसँ भड़ल-पुड़ल
पंचांगम कहबै छै।

पात चढ़ै छै देव सीर ऊपर
पूष्प गंध अकास उड़ै छै।
शक्तिवर्द्धक बीआ बनि कऽ
जीवन दान करै छै।

डाँट-चाम मिलि-मिलि
गाछ रूप धड़ै छै।
अपन जिनगी हरैत-भरैत
दोसरोक जीवन भरै छै।

सीरक तँ अजीब रूप छै
तर-ऊपर जिनगी धड़ै छै।
अपन कलाकारी देखा-देखा
नाओं कहाँ बदलै छै।
❍❍

काँच फल

काँच फलक ठेकान केते
जेते काल देखै छी
मात्र तेतेक।
काँच माटिक मूर्ति जहिना
ढॉचा मात्र कहबैए।

तहिना तँ फूलोसँ बनल फल
सिरखार मात्र कहबैए।
वएह सिरखार आशा बान्हि-बान्हि
रौद-बसात सहैए।

पहिने सिरखारसँ खिच्चा बनैए
फलक रूप तेकर बाद धड़ैए।
मुदा ऐ दुनियाँक बिसवासे केतेक
खिच्चासँ आगूओ बढ़त।

डम्हा-डम्हा रंग लऽ कऽ छिटकत
पाकल रसगर फल बनत।
काँचे फल जकाँ दुनियो चलै छै
हँसैत-कनैत संग बढ़ै छै।
❍❍❍

लघु कविता-

हँसैत लहास

लहास माने मुइल
मुइल माने लहास।
ई के नै बुझत हठात्।

गुम-सुम भेल छल जँए ओ
बुझाइत छल लहास तँए ओ।

मुदा,
आब ओ बाजत
बजैत-बजैत हँसत
अहाँक कृतिपर
बनल संस्कृतिपर।
❍

प्रकाश

ज्ञानक प्रकाश
जाइत अछि ओतए तक
जेतए कियो जा नै सकत हठात्।
मुदा,
ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम
सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन धराम।
❍

अगिलह

आगि-पानिकेँ
मनक माइनकेँ
अजीब बात अछि।

मित्र दुश्मन देवता
तीनू मानि लोक
धड़ैत अछि छेबता।
सप्पत खाइ काल देवता
लोकक घर जड़बैकाल मित्ता।
❍

एकक मीत

दोसरक हृदए करैत विदीर्ण
अपनाकेँ साबित करैत अछि वएह
तीनूमे बँचल अछि जएह।
बारहे-बारह घंटा दुनूक छै
राति
दिनक।
आगूमे अड़ल छै
उदय
अस्त।
रातिक अंत उदयसँ होइए
भोरक अस्तसँ...
अस्त-व्यस्त हम
नै बूझब तँ के बुझा देत?
❍

दर्दक डरे

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ
सुनैले नै छथि कियो तैयार।
जइमे मात्र ओ मात्र गाओल जाइत अछि
संस्कृतिक गीत।
कियो नै बनए चाहै छथि मीत।
करए जे पड़तनि हुनक दर्दसँ प्रीति!!
❍

सुधार

भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे
जइमे काजर सन कारी राति
दिनोमे बुझाइत।
अहीं कहु यौ भाय
तखनि शीशामे केना आएत
ओकर चित्र केना देखाएत?
❍

विचारक फाँट

अहाँक गप
अपन मन
दुनू मिलैए।
मिलि दुनू अछि चौचंग
खोजि रहल अछि वसंत।
मुदा
वसंतक चिड़ैकेँ
संग नै राखए चाहैए
ओ असगर काइए की लेत?
मने-मन चिंता करै छी हम!!
❍

पड़ाइन

गामक मुहथरि
जंगल बनल अछि।
आइ धरि
गौआँ बौआइत अछि।
पीचे-पीच
सड़के-सड़क।
काते-कात
कतियाएल अछि।
बजारे-बजार
बौराएल अछि।
❍

तत्व ज्ञान

वसंत आएल
गाम जाएब
आब एतए
रहि नै पएब
वसंतेक खोजमे तँ
छी बौआएल।
❍

धोधरि

भुरकीसँ भार बनि
बील बोहरि धरि
बनि-बनि असंतोष।
धोधरि बनि
आगि जकाँ धुधुआ रहल अछि।
❍

मंगल

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला
चारूकात नजरि दौगा-दौगा
हृदैकेँ केने अछि थीर।
नै गेल ओइ भीड़।
देखि भागम-भागक होर
अपनाकेँ केलक एकोर।
❍

बुढ़ाड़ीमे

बजैत रहलौं हरदम।
केलौं ने एक्को छन।
सुनैत-सुनैत मनमन्द
सुनबैमे होइत छी बुलंद।
आब की करब
मन अछि चौचंग।

जिनगी चाह करैए
कर्मक बाट देखबैए।
❍❍

टनका/वाका

(१)
आप्त-व्याप्त छै
भुखमरी आइयो
अनठबै छी
देखि देखि हमहीं
आँखि अँखियबै छी
❍

(२)
समस्या आप्त
सोलहनी सजल
साहित्यकार
लेखे पुरान छै आप्त
केना एतै यथार्थ
❍

(३)
तोरा पएरे
हम नै जेबो आब
किएक तँ तूँ
भेलँ लापरबाह
चऽल कोढ़िक चालि
❍

(४)
अहाँक आँखि
चपेटि लैत अछि
हमर हृदै
औनाए लगैत छी
चारू भुवन हम
❍

(५)
दीन-हीनले
नाटक करैत छी
दया देखा कऽ
दया-सँ-माया बीच
हमहीं फॅसल छी
❍

(६)
रातिक अंत
उदयसँ होइए
दिनक अस्त
दुनूमे भेद कऽ कऽ
अजश धड़ैत छी
❍

(७)
पग पगहा
बाट-बटोही-घाट
ढाठ बनैए
अकर्म कर्म बूझि
जे धारण करैए
❍

(८)
जीवन रस
कालचक्र ओझल
केने आएल
दिन-रातिक भेद
तखनि तँ हएत
❍

(९)
लत्ती अमर
आँखि मारि-मारि कऽ
कहैए आबो
फल विहुन हम
रहल रहब आबो
❍

(१०)
सातम तल
धरती सजल छै
पातालपर
अकासो सात खण्ड
मर्त देव लोक छै
❍

(११)
बाट-बटोही
बाटे-बाट ढहना
हँसि-खेल कऽ
सभ साँझू पहर
ठेही मेटबैत छै
❍

(१२)
बीआ अँकुर
बढ़ैत बनल गाछ
पौरुष पाबि
सन्हिया धरतीमे
बनौलक जिनगी
❍

(१३)
देखि तुलसी
अनन्त सरोवर
उमरि झील
हुलसि-हुलसि कऽ
नाचि-नाचि गबैए
❍

(१४)
अश्रु सजि कऽ
अनन्त कमल बीच
प्रेम पसारि
अमृत सजबैए
सेज-सजा कऽ छाती
❍

(१५)
बर्खाक बून
धारसँ मिलि धारा
धर-धरा कऽ
अपना गतिए ओ
चलए चाहैत छै
❍

(१६)

अकास बीच
स्वर्ग-नरकक छै
संसार आप्त
रचि बसि संसार
भाग्य बनल आश

❍

(१७)

तामि कोड़ि कऽ
परती-पराँत बीच
भोगक चास
बनि-बनि भेल छै
ऊँचका बास-डीह

❍

(१८)

साटि-साटि कऽ
सहे-सहे बनल
हुच्ची सदृश
एका-एकी मेटए
हँसैत खनदान

❍

(१९)
सिरजि रूप
शिखर सौन्दर्यक
देखि बिहिया
आनि जगबैए ओ
अपन सजबैए
❍

(२०)
प्रेमीक रूप
जमुनामे सौरभ
पाबि प्रकाश
चढ़ि-चढ़ि कऽ आबि
सभकेँ ओ देखैए
❍

(२१)
कहू केहेन
मिथिला जेहेन छै
दसो दिशाक
धरती नभ बीच
किसान-बोनिहार
❍

(२२)
रंग-बिरंगी
मने हेराएल छै
दृष्टि धरती
आत्मिक-भौतिक ओ
दैवी रूप बनल
❍

(२३)
आगत देखि
तीनूक तकरार
तत्व कहैत
चिक्कन चालि चलैत
परखि-परखि जीबू
❍

(२४)
हारि-जीतक
अजीब ऐ सृष्टिक
मन ने माने
जोग-भोग सिरजि
विपरीत चलए
❍

(२५)
सोचि-विचारि
नापि चलि बाटकेँ
जोतिते चास
चलि-ससरि चलू
लाट बना संगमे
❍

(२६)
बिर्रोमे उड़ि
दोगे-सान्हिए पड़ा
मातृभूमिसँ
पुरुषत्व गमा कऽ
बौआ रहल अछि
❍

(२७)
फूल जहिना
सभतरि फुला कऽ
गंध बँटैले
संग कए बसात
नभ बीच चलैत
❍

(२८)
नदी गोंगिऐ
कमल केर फूल
रँग बदलै
रौद लगलापर
उज्जरो भऽ जाइत
❍

(२९)
बोनिहारिन
केर सोणितक छै
सड़कपर
देल अलकतड़ा
नै छै ओकरे पता
❍

(३०)
फूस घरक
छप्पड़पर ठाठ
तीन आसक
खढ़, खपड़ा, चार
एसबेस्टस आब
❍

(३१)
चाकक एक
हाथ परहक दू
माटि सानि कऽ
खपड़ा बनैत छै
थोपुआ आ नरिया
❍

(३२)
दुनू मिला कऽ
ठाठपर पड़ै छै
रौद बर्खासँ
रच्छा करै छै घर
तैमे लोक रहैए
❍

(३३)
रौद वसात
शीतलहरि धुनि
गरमी जाड़
वसंत-सँ-वहार
मिथिलाक इयार
❍

(३४)
जाड़ मासमे
शीतलहरी धुनि
अबै-जाइए
कनकन्नी होइ छै
थरथरी धड़ै छै
❍

(३५)
हरिअरका
डग-डगीसँ भरि
जाइत अछि।
करगर रौदसँ
रोहनि सभ साल
❍

(३५)
बैंग बजैए
टर्र-टर्र रटैत
घोघ फल्का कऽ
उछलि-उछलि कऽ
तड़ैप-तड़ैप कऽ
❍

(३५)

अगम पानि
जीवक जिजीविषा
उहापोहसँ
बनल स्थिति अछि
अप्पन आन भेल

❍

(३६)

कदम फूल
सभरँगा रँगसँ
शोभित छै
झड़ैत रहैत छै
समए समैपर

❍

(३७)

दिन-रातिक
बीच संसार अछि
विचार बीच
मेघौन आप्त छैक
उग्रास व्याप्त छैक

❍

(३८)
खने मेघौन
खने उग्रास भऽ भऽ
चलैत-चलि
कारी घटा बनि कऽ
बून-बनि सागर

(३८)
अकास मार्ग
ठनका आ पाथर
नचि-निच्चाँ
किनछड़ि बिरजि
परिचए दइए
❍

(३९)
चढ़ि अखार
दिन-राति सुगंध
महमहबए
पड़िते फुहारसँ
चारूकात अम्बार
❍

(४०)
भीर-कुभीर
छिड़ियबए क्षीर
सदति संग
ससरए समीर
राग-विरागक
❍

(४१)
विशाल क्षेत्र
रंग-रंगक फूल
फुलाएल छै
दृष्टि बिनु आन्हर
देखिनिहार लोक
❍

(४२)
गाछीक बीच
हजारो वृक्ष आप्त
सबुर गाछ
मेवा फड़ैत छैक
नजरिक कमाल
❍

(४३)
खेल खेलक
कालक बनाओल
खेले विचित्र
दिन-राति चलि कऽ
मतिए बदलैए
❍

(४४)
धरती संगी
संग मिलि हँसए
मातृभूमिकेँ
सेवा कऽ जगबैए
जगेन्हिार मात्र
❍

(४५)
आगि पजरि
तड़पि छटपटा
धरती फाड़ि
ज्योति पबैले जीव
निकलए लगैत
❍

(४६)
माघ मासक

राति सतपहरा
दर्शन पाबि
सहन सिरजि कऽ
राति-दिन हँसए
❍

(४७)
अद्भुत खेल
विधाता बनाओल
आँखि-मिचौनी
राति दिन बदलि
दिन राति बनैए
❍

(४८)
वसन्त राग
नव सूत जेबर
भरैत कहए
सदिकाल जिनगी
परखैत चलए
❍

(४९)
समए संग
गति-मति चलिते
ग्रह-नक्षत्र
दोहरी बाट बनि
अन्हार इजोतक
❍

(५०)
तमाशा बनि
कंगाल बनल छै
सपना बीच
सपनाए रहल
दिशाहीन देशक
❍

(५१)
खुशी खुशीक
दुनियाँ बनल छै
धिया-पुताक
देखि-देखि नचैत
कथनी बीच भेद
❍

(५२)
लुत्ती छिटकि
ठौहरीक धधड़ा
करिया धुआँ
जीव-जन्तु पड़ाइ
धीरजसँ सहैत
❍

(५३)
शीतल नोर
झहड़ि-झहड़ि कऽ
कहैए सुना
मनक ताप बीच
पटबैत रहबै
❍

(५४)
रग्गरक छै
पसरल वनमे
धधड़ा-धुआँ
अश्रु करूआइते
पड़ाइ छै जीव
❍

(५५)
वेदन वाण
योग-वियोग बीच
लह-लहा कऽ
हफैत हवा बीच
नयन नीर ज्योति
❍

(५६)
कोमल कली
लहलहाइ जब
शीतल पाबि
शिंगार सजबैत
जुआनी पबिते ओ
❍

(५७)
गुण धरम
देखि पड़ैए तब
मधुर प्रेमी
कर्मक संग भाव
अनैए जब तब
❍

(५८)
हँसि गाबि कऽ
जगत जननीकेँ
सेवा करैए
आदिसँ राति-दिन
मिथिला केर वीर
❍

(५९)
वंशक वृक्ष
लतरि-पसरि कऽ
विशाल बनि
कोसी-कमला बीच
बलिदान करैए
❍

(६०)
बाते-बातमे
झगड़ैए तानि कऽ
नइ रहैछ
कल्याणक माइन
रावणक सखाकेँ
❍

(६१)
सृजए नित
सौहार्दक बाट ओ
जननी प्रेमी
बूझि-बूझि मर्म ओ
नूतन घाट दुर्गक
❍

(६२)
लइते जन्म
धरतीपर आबि
अकास बीच
चक्रक चक्का जानि
नूतन बाट बना
❍

(६३)
धारी अनेक
दुर्ग सेहो अनेक
शक्ति-सँ-शक्ति
सटि-सटि करैछ
पार बटोही ओर
❍

(६४)
सुख-संतोष
सरोवर बनैए
रूप करम
सदि लीला करैए
बनल सत् कर्म
❍

(६५)
ठूठ अपन
करनीसँ भेल छै
बाँस सभटा
उजरा बगुलाक
फेरमे पड़ि-पड़ि
❍

(६६)
दूध अमृत
आषब-अरिष्ट भऽ
जीवन दान
करैत मुदा गाए
पशु बनि जीबैए
❍

(६७)
पौरुष पाबि
रोकए नै केकरो
बाट-घाट ओ
सिरजि-सिरजि कऽ
नित नूतन घाट
❍

(६८)
एक वनमे
लतरि पसरि कऽ
पसरि विश्व
काटि-छाँटि कऽ बाट
बाटे ले झगड़ैए
❍

(६९)
अछि केतेक
कल्पना यर्थाथमे
अन्तर बूझि
लगा रहलौं नहा
घामसँ स्वयं हम
❍

(७०)
अखनि अहाँ
रंग-रंगक फूल
सदृश बनि
बनल फूले जकाँ
आप्त-व्याप्त छी अहाँ
❍

(७१)
हमर प्राण
थर-थर कँपैए
बनि लहाश
चुपचाप ठाढ़ भऽ
देखि रहल अछि
❍

(७२)
बबाजी बीच
पसरल जहिना
सेवा धरम
समाज सेवी बीच
गरीब-गरीब छै
❍

(७३)
पाबि सकलौं
जिनगी अकारथ
बनि-बनि कऽ
बाट धेलौं अपने
भीतर घात भेल
❍

(७४)
जरना बनि
सील बनल छैक
रश्मि-सँ-रश्मि
हँसि-हँसि जरै छै
मुर्दो बनि हँसै छै
❍

(७५)
हमरा पाछू
धेने रहैत अछि
हरेक छन
उठैत-बैसैत ओ
कखनो नै छौड़ैए
❍

(७६)
चलि-चलि कऽ
जिनगीक डगर
चलिते चल
पृथ्वी नक्षत्र जकाँ
चान-सूर्यक गति
❍

(७७)
समए संग
गति-मतिसँ चलि
ऋतु सदृश
बढ़ि अनवरत
गंगा-यमुना जकाँ
❍

(७८)
जश अजश
एतइ छोड़ि-छाड़ि
चलि जाइए
गति-विधि प्रकृति
मनुखो तँ सएह

(७९)
विश्वास संग
साहस-सँ-संतोष
साटि-साटि कऽ
प्रकृति सुर-ताल
बदलैत मौसम
❍

(८०)
कुशल फूल
रंग चढ़ि ललिया
पान करैत
भ्रमर रस पीब
भऽ दिवा रसराज
❍

(८१)
पूजा आसन
देखि राग-रागिनी
सुर सजि कऽ
सिंघासनो बनैत
चटाइओ बनैत
❍

(८२)
भक-इजोत
कनखियाइत छै
चानमे जेना
इजोत-अन्हार छै
सियाही-रोशनाइ
❍

(८३)
कहि रोशन
टघरि सियाह भऽ
जअ जहिना
तिले-तिल तिलकि
कुंड बनि जरैत
❍

(८४)
भूमि जमन
नानी-दादीक खिस्सा
हृदैमे गंग
ॠतु मिथिला सन
चान-तरेगन छै
❍

(८५)
जीत-जिनगी
जंगल बनि दंभ
मंगल आस
धारण कऽ करैए
दिन-रातिक भेद
❍

(८६)
उबटन सदि
बाल देह लगैए
जेबर बनि
चेतन देह चढ़ि
रीत-नीति कहैए
❍

(८७)
बाम-दहिन
बाँहि पकड़ि धोबि
पाट पटकि
धफारि पानि डूमा
पटकैत एलैए
❍

(८८)
खेत जजाति
मुड़हन दोहन
तेहन सजि
कोणे-काणी हिया कऽ
राखी ओ सजबैए
❍

(८९)
आँगन आबि
जनदार बास ले
रूप-कर्म भऽ
कर्म-शब्द सजैए
बोलती बनि-बनि
❍

(१०)

मोड़ि मनुआँ
बनि-बनि शिकारी
वीन बजेलौं
दिने बहकि गेलौं
बाटे भोतिया गेलौं
❍

(११)
ठाढ़े ठिठुरि
पाबि रौद लू-लूआ
समए पाबि
बनि बरखा बाढ़ि
समुच्चा दहा गेलौं
❍

(१२)
सर-समांग
एकोटा ने देखै छी
असे-आससँ
स्वागत करैत छी
आश जुड़ा कहै छी
❍

(९३)
संग-सुसंग
आस मारि बेआस
छी समर्पित
भव-भार भरि कऽ
अबैत रहल छी
❍

(९४)
चालि कुबुधि
चलि-चलि कऽ छका
सुबुधि पर
आइ भारी पड़ैए
छगुन्तामे उमड़ि
❍

(९५)
जेकर लूरि
वंश धड़ैत अछि
भक-इजोत
टपि-टपि हँसैए
थाहि-थाहि बढ़ैए
❍

(९६)
रंग रहस्य
सुरतानि कहै छै
मानवते छी
सभसँ पैघ रस
वेद-भेद रहस्य
❍

(९७)
मरण देखि
तिलमिला जाइ छी
तारन पाबि
सकबेधल रहि
अपनाकेँ पबै छी
❍

(९८)
बीच पानिमे
चलनि भऽ चालनि
पकड़ि पाँखि
गछाड़ल रहलौं
चलियाइत एलौं
❍

(९९)
क्षण-पलमे
जीअन-मरण छै
अमृतो पीब
नरक-स्वर्ग द्वार

टपए पड़ैत छै
❍

(१००)
बाड़ि देलक
टारि देलक सम
बनि बदलि
फँसि जालमे सभ
साँप-अन्हैमे भेद
❍

(१०१)
समए संग
संगी भऽ चलि संगे
भाग्य-करम
पगडंडी बनि कऽ
आगू नचैत पग
❍

(१०२)
सजीव रस
बिनु चिखने नृह
केना बूझब
पताल ऊँपर छै
सजल ई धरती
❍

(१०३)
पानि पाथर
बनि बनैत जब
धारा धारक
अड़कन धड़ैत
एक-एक पाथर

(१०४)
बिला बुइध
जेम्हरे जे चललौं
पहुँच गेलौं
छोड़ि मनोकामना
गाबै छी झूमि-झूमि
❍

(१०५)
नवका चालि
चलि-चलि कऽ जाल
फेकैत एलौं
कखनो अर्थ-जाल
कखनो शब्द-जाल
❍

(१०६)
गाछ-सँ-फूल
सिरजि सजबैए
शक्तिक संग
जिनगीक परीक्षा

साधक सजबैए

❍❍❍

हाइकू

(१)
अगहनमे
कटनी करैए ओ
धान खेतमे
❍

(२)
भरि दिन ओ
झाँट-बर्खा सहैए
रोपनि लेल
❍

(३)
गर्मी मासमे
किसानक आशमे
ठंढ़ी अबैए
❍

(४)
वनमे बास
वनफूलक आस
अमलतास
❍

(५)
हरिअरसँ
तेज भऽ जाइत छै
आँखिक ज्योति
❍

(६)
शान्त हवासँ
अन्हर-बिहाड़िक
आगम होइ
❍

(७)
पीपर पात
बिहरन आप्त छै
तैयो डोलैत
❍

(८)
अन्हार गुप्प
हाथो-हाथ ने सुझै
हवा बहैत
❍

(९)
किष्कार मास
लताम लुबधल
पीरे-पीअर
❍

(१०)
गोल-मोल छै
धप्-धप् चान छै
दाग लागल
❍

(११)
तिक्खर रौद
बालुक जहाजकँ
तेजी अनैत
❍

(१२)
मरूआ बीआ
रोहनि आम दुनू
उमझै पकै
❍

(१३)
चम्पा-चमेली
रोहनिक नक्षत्र
कड़क रौद❍

(१४)
रँगल कोसा
नेने अबैत संग
केरा घौरकँ
❍

(१५)
मोर-मोरनी
सह पाबि वादल
नाचए लगै
❍

(१६)
केराक वीर
अपन वीरताकेँ
घोकचौने छै
❍

(१७)
उज्जर मेघ
टिकरी बनि-बनि
जेना चलैए
❍

(१८)
अंडी छाहरि
दैत अछि राहति
कोशिकन्हामे
❍

(१८)
कनैल फूल
पत्तामे नुकाएल
रहैत अछि
❍

(१९)
थल कमल
गाएक घंटी सन
होइत अछि
❍

(२०)
इन्द्र कमल
होइत अछि फूल
उज्जर धप्प
❍

(२१)
मेघ बादल
दुनू चलै साधल
पहाड़ी दिस
❍

(२२)
मेघ लटकै
प्रकाश छिरियाइ
प्रकृति नाचै
❍

(२३)
शक्ति प्राकृत
समाने सजल छै
देव नै भेद
❍

(२४)
सुआद आम
केना पबैत अछि
चिन्हू देवकेँ
❍

(२५)
माघ-फागुन
मजरि आम गाछ
टुकिलिआइ
❍

(२६)
वोनक बाट
उत्तरे-दछिने छै
धार सदृश
❍

(२७)
अन्हर-जाल
भुरुकबा सूर्ज छै
मानि फरिच्छ
❍

(२८)
अपराजित
सुधरि कऽ बदलि
कारी उज्जर
❍

(२९)
थल-कमल
बदलि रंग गाढ़
लाल-उज्जर
❍

(३०)
गर पकड़ि
धड़ैत बिहाड़ि छै
जेठुआ गरे
❍❍

शेनयूं-

(१)
ठोरक रूप
देखि-देखि परखि
मुँहक हँसी
❍

(२)
भजैत चलू
हँसीक खाँटी रूप
झल अन्हार
❍

(३)
देखि-देखि कऽ
हँसैत डेग उठा
चलैत चलू
❍

(४)
झोंक जुआनी
उष्मा पाबि उमसि
झोंकि अबैत
❍

(५)
दाबि रहल
विचार केर धार
कुशहा आब
❍

(६)

आश-निराश
चलैत आबि सदि
धुक्कम चालि
❍

(७)

संगे उठलौं
लाजे पड़ाएल छै
भूत-भविस

(८)

सूखल जानि
जेतए अँटकै छी
काह-कूहमे
❍

(९)

रतुके काज
दिनो गमा बढ़ती
तानि नै पाबि
❍

(१०)

आशा तोड़ि कऽ
अन्याय जुनि करी
सकारथो छै
❍

(११)

देहक पानि

आत्म निर्भर भेने
फुलाइ रूप
❍

(१२)
चिक्कस बनि
भूमि भरैत एलै
आश प्रेमक
❍

(१३)
जिनगी जेना
रोपि ठेहुन अड़ै
भीड़-कुभीड़
❍

(१४)
संगम संग
सम जहिना चलै
भट्ठा नै शिरा
❍

(१५)
खेल-खेलाड़ी
फेकैत रहैत छै
तर्क-कुतर्क
❍

(१६)
पछुआ रूप
धड़ैत रहैत छै
निर्मम भाव
❍

(१७)
तहक तह
तहियेलासँ भेटै
भेद-कुभेद
❍

(१८)
शक्ति पाबि
सिंह फुकै छै शंख
सत्य असत्य
❍

(१९)
सोणित दान
महादान होइछ
जीवन लेल
❍

(२०)
हरिअर आ
पीअर मिलि दुनू
काँच-पाकल
❍

(२१)
एतुक्का गिद्ध

पड़ाइन करैए
मनुक्खे जकाँ
❍

(२२)
गुफाक गुंज
श्वेत वादलक सह
अनुगूंजित।
❍

(२३)
सुरेब सिसो
ऋृगवैदिक सन
कठमकठ
❍

(२४)
पहाड़ पार
उत्तरवारि कात
किछु अबस्स
❍
(२५)
पाथर उगै
पानि सटकै छैक
मेघ लटकै
❍

(२६)
सुग्गा बैसल
सोचि रहल अछि
पाछू लोक ले
❍
(२७)
सुग्गा बैसल
छै चिन्तामे डूमल
दीन-हीन ले
❍

(२८)
परहेज आ
संयमसँ भेटैछ
पैघ जिनगी
❍

(२९)
झूठ बाजब
पाप होइत अछि
स्वयं छोड़ि नै
❍

(३०)
एकटा चान
सातटा देखाइत
मोतियाबिन
❍

(३१)
कनैल बीआ
घुच्ची बना खेलैत
बच्चा-बेदरू
❍

(३२)
माछक चटनी
जोड़ी मरूआ रोटी
चहटगर
❍

(३३)
दुर्गा पूजाक
मतलब होइछ
शक्तिपूजा
❍

(३४)
राजनेतासँ
नीक मानल ऐछ
काजनेता
❍

(३५)
गेंदा पातक
घा हाथ-पएरक
रससँ छुटै
❍

(३६)
खेती-वाड़ीकेँ
किसान लचारीकेँ
कोन महत
❍

(३७)
सबल साँच
दुर्बल भेल झूठ
दुनूमे फाँट
❍

(३८)
खेरही दालि
नेबो रस मिलल
हृदै खिलल
❍

(३९)
गामक चौर
बिसवासू खेती नै
आइ धरि छै
❍

(४०)
ऊँच-नीचक
भेद झपने जाइ
हरिअरी यौ
❍

(४१)
निचुका सभ

चौरस अ-हटल
ऊँचका हटि
❍

(४२)
प्रकृति शक्ति
लाल रंग पाबि कऽ
हँसैत अबै
❍

(४३)
प्रकृति हँसै
लाल रंग पाबि
सुधार लेल
❍

(४४)
बीचक मेधा
हरिअर उज्जर
दूरी व्याप्त छै
❍

(४५)
सघन डारि
एक्को रत्ती नै बैर
निच्चाँ-ऊपर
❍

(४६)
निच्चाँ-ऊपर
समतल सघन
देखू एतए
❍

(४७)
कोनो नै आश
छोड़ि पोरोक साग
सरदियाह
❍

(४८)
केरा गाछमे
घौरक संग कोसा
खुश छै पूरा
❍

(४९)
केरा गाछमे
घौरक संग कोसा
लटकल छै
❍

(५०)
भारी रहितो
बीर खा-खा थिकहुँ
अँखियाएल
❍

(५१)
नीचाँ-ऊपर
सक्षम छै सभठाँ
चाही टूस्सेटा
❍

(५२)
राति दिनमे
कोनो नै अछि हीन
नाप-जोखमे
❍

(५३)
गुण-दोषसँ
एक-दोसर बीच
अबैए फाँट
❍

(५४)
दिन प्रतीक
बनि ज्ञानक अछि
भेल महान
❍

(५५)
राति होइए
अज्ञानक प्रतीक
लोक कहैए
❍

(५६)
दिनकेँ दुन्नी
राति चौगुन्नी सेहो
लोके कहैए
❍

(५७)
निर्णए लिअ
नीक संग अधला
होइत कथी
❍

(५८)
आश धड़ैए
बाट पतझारक
सभक सोझाँ
❍

(५९)
उपए बिनु
सहसहबइए
मनुख जन्म
❍

(६०)
पूर्ति प्रकृत
करए चाहैत छै
मनुख तन
❍

(६१)
मनक बाढ़ि
आबि-आबि तोड़ैए
तन-सँ-तन
❍

(६२)
आड़ि-धूड़कँ
टुटलाहा मुँहकँ
कियो ने जौड़ै

(६३)
कातिक मास
डंका बजा कऽ
तोड़ि दइए
❍

(६४)
ओसा बना कऽ
मोट-महीं बेरा कऽ
उसनै कुटै
❍

(६५)
खाहिंस भरे
सोचि-सोचि कऽ डरे
महिंका बेचै
❍

(६६)
छने-छनाक
उड़ि जाए दनाक
भेल निहत्था
❍

(६७)
दुनू चलैए
इजोत-अन्हारक
खेलक संग
❍

(६८)
जल-पोखरि
जबकल रहैत
सदि ठमकि
❍

(६९)
अपन रश्मि
आगू बढ़बैमे केने
पृथ्वी अन्हार
❍

(७०)
रोकि दै छह
वोन-झार प्रकाश
विह्वल सूर्ज
❍

(७१)
चढ़ि अन्हार
पख अमवसिया
कहबैत छै
❍

(७२)
काटि इजोर
कपचि-सपचि कऽ
पून प्रकाश
❍

(७३)
विष जहान
जौहरी जोहि-जोहि
ज्ञानी थलग
❍

(७४)
देह बिखाह
बिसबिसा बनबै
बतकथा भऽ
❍

(७५)
जेहेन मुँह
हँसी तेहेन बनि
तान भरैत
❍

(७६)
बिनु प्रेमक
खाली ई दुनियाँ छै
देखू अराधि
❍

(७७)
मति-विमति
सुमति-कुमति भऽ
किछु ने पेलौं
❍

(७८)
कोनो थिर छै
कोनो जुआरि सेहो
सजि-धजि कऽ
❍

(७९)
घर समाज
उसर भऽ उसरि
काल कौशल
❍

(८०)
कोकिल स्वर
सर्व प्रिय भऽ भरै
हृदै तरंग
❍

(८१)
बहील कहि
रटैत छै आदिसँ
नै आश धरू
❍

(८२)
बनि भिखारी
पसरल दुनियाँ
दानी शिव छी
❍

(८३)
बकरी खुट्टी
खुटेस-खुटेस कऽ
पढ़ैत पाठ
❍

(८४)
पुतरा बनि
मूक नाच नचैत
कठपुतरी
❍

(८५)
बेटी किअए
बनेलौं शिव अहाँ
भूख सजेलौं
❍

(८६)
भाव मनक
समेटि-समेटि कऽ
रूप सजैत
❍

(८७)
बाम दहिन
बिनु बूझि-सूझि कऽ
बूच भऽ गेलौं
❍

(८८)
जेहेन लूरि
तेहेन जिनगी भऽ
चलि-चलैत
❍

(८९)
चिक्कन पानि
सदृश चमकै छै
कएल कर्म
❍

(९०)
पबैत गति
उपरौटा खाली छै
जातकेँ देखू
❍

(९१)
तरौटा छाती
लदने रहैत छै
उपरौटाकेँ
❍

(९२)
दोखाह दुरि
केने अछि वसात
मिथिला वास
❍

(९३)
खेती-पथारी
चौपट्ट भेल अछि
पलायनसँ
❍

(९४)
भाषा-साहित्य
बान्ह-बन्हाएल छै
पेट पकड़ि
❍

(९५)
विश्व बजार
रंग-बिरंगी घाट
सजल बाट
❍

(९६)
प्रतिष्ठा बचा
नव दुनियाँ बना
स्वतंत्रा लेल
❍

(९७)
बनल जीव
आनन्द सज्जित छै
पाँच कलासँ
❍

(९८)
नै रोपाएत
कट्ठो धान ऐबेर
रौदी आएल
❍

(९९)
धूरा भरल
असमान ऊपर
बँचत प्राण
❍

(१००)
भरतै पेट
आशा अगिला जेठ
भगतै रेट
❍

गजल

(१)
एतऽ माथ चकराइए चलू घूमि चली
तनो-सँ-तन छुबाइए चलू घूमि चली

कियो केकरो नहि देखैए ऐ समाजमे
मोने मन झगड़ाइए चलू घूमि चली

गोर मौगी गौरबे आन्हर अछि अड़ल
करिया बाट बुझाइए चलू घूमि चली

कोन उपए लगाबी तौड़ैले ऐ फानीकँ
टूटि मन जे कनाइए चलू घूमि चली

करब नै कोनो आस ऐ समाजसँ हम
उमेशो जौं घुरियाइए चलू घूमि चली
❍❍

(२)
कल्याणक बाट नै पकड़तै लगैए ई
भाँड़ि-भाँड़ि सभकेँ झपटतै लगैए ई

अकालोमे काल बनि बौएलक सभकेँ
किछु बाजी तँ और मखड़तै लगैए ई

कोनो आंगुर कटने अपने होइ घा
भेद नै करबै तँ झगड़तै लगैए ई

मुँह सीब कऽ रहब तँ रहि सकैत छी
लोक गीत जँ गेबै चहकतै लगैए ई

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज अपन
उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।
❍❍

परिचए-पात : उमेश मण्डल

जन्म तिथि : 31 दिसम्बर 1980

माता-पिता : श्रीमती रामसखी देवी, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल।

पत्नी : श्रीमती पूनम मण्डल।

पुत्री : पल्लवी आ तुलसी कुमारी।

पुत्र : मानब अनीश मण्डल।

भैयारी : श्री सुरेश मण्डल आ मिथिलेश मण्डल।

भतिजा-भतिजी : रेणु, अखिलेश, रीना, अवनीश, अवधेश, प्रियांशु।

पत्रालय : गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन- 847410, बिहार।

सम्प्रति : गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. 06, पिन- 847452, जिला- सुपौल।

शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), बी.आर. अम्बेदकर बिहार विश्व विद्यालय, मुजफ्फरपुर।

प्रकाशित पोथी : निश्तुकी (पद्य संग्रह), मिथिलाक संस्कार गीत, विध-बेवहार गीत आ गीतनाद (मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त मैथिली लोकगीतक पहिल संकलन), मिथिलाक जीव-जन्तु/ वनस्पति और जिनगी'क डिजिटल सचित्र ऑनलाइन संस्करण, मिथिलाक सभ जाति-धर्मक लोकमे प्रयुक्त लोकगीतक रेकार्डेड ऑनलाइन ऑडियो तथा वीडियो डिजिटल संकलन।

सह सम्पादक : विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका एवं विदेह-सदेह पत्रिका- ISSN 2229-547X VIDEHA
(www.videha.co.in)

योगदान : विकीपीडियामे मैथिलीक स्थानीयकीकरणमे योगदान, मैथिली भाषाक मानकीकरणमे योगदान। दर्जनो गोष्ठी/ संगोष्ठी/ परिचर्चा (मैथिली)क आयोजन, दर्जनो पोथी प्रदर्शनी (मैथिली), पचासोसँ ऊपर मैथिली-पोथीक अक्षर संयोजन।

ई-पत्र : umeshberma@gmail.com

मोबाइल न. : 08539043668, 09931654742